International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-9 | Issue-2, 2026 | ISSN: 2581-6829 | http://www.edusanchar.com

तुलसीदास जी के साहित्य का शिक्षा में अनुप्रयोग

शोध पर्यवेक्षक
प्रो.(डॉ.) सपना जोशी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

शोधार्थी
मीना तिवारी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

1. प्रस्तावना

तुलसीदास जी तत्वद्रष्टा महापुरूष थे। उन्होने समाज की अनेक समस्याओं पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया तथा उनका शाश्वत समाधान खोजने का प्रयास किया। तुलसीदास जी ने समय की परिस्थितियों के अनुकूल जो उचित है, उसी पर भारतीय समाज को चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने समस्त ग्रंथों के माध्यम से जीवन मूल्यों का इतना दार्शनिक विश्लेषण किया है कि यदि काव्य तत्व को हटा दिया जाये तो उनके सभी कृतियां दर्शन ग्रंथ की भांति विभिन्न उत्थान का प्रयास करती दृष्टिगोचर होती है।

तुलसी साहित्य का शिक्षा में उपयोग व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक और अध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है। रामचरित मानस जैसे ग्रंथों के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढ़ावा मिलता है, जिससे विद्यार्थी आदर्श नागरिक बनकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

2 तुलसी साहित्य में शिक्षा का अर्थ

तुलसी साहित्य में शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों द्वारा सर्वांगीण विकास से है। जिसका लक्ष्य एक आदर्श समाज का निर्माण करना है जिससे व्यक्ति में भक्ति, त्याग और समन्वय की भावना विकसित हो। यह शिक्षा व्यक्ति को विपरित परिस्थितियों में भी मर्यादा, करूणा और ईश्वर पर विश्वास रखने की प्रेरणा देती है। तुलसी साहित्य में शिक्षा में शिक्षा के प्रमुख आयाम निम्न है –

1. **चरित्र निर्माण** – रामचरित मानस में भगवान राम को आदर्श पुत्र, भाई, पति एवं राजा के रूप में चित्रित किया गया है। यह चरित्र हमें धैर्य, संयम एवं विपरित परिस्थितियों में भी सत्यनिष्ठ रहने का पाठ सिखाता है।
2. **अध्यात्मिक शिक्षा** – ज्ञान के द्वारा ही जीव अध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर होता है। ज्ञान से मानव में भक्ति के भाव उत्पन्न होते है। तुलसी साहित्य का मूल यह है कि पहले व्यक्ति की अज्ञानता का विनाश किया जाना चाहिए, तभी हम उसको अध्यात्मिकता की ओर अग्रसर कर सकते है।

3. **सामाजिक सद्भाव एवं समन्वय** – उन्होंने समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाने और उनमें समानता, समरूपता, स्नेह व सौहार्द स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने विरोधी धाराओं का समन्वय कर भारतीय संस्कृति में एकता लाने का प्रयास किया।
4. **लोक कल्याण** – तुलसीदास एक लोक नायक के रूप में समाज की उन्नति एवं प्रगति के लिए कार्य करने की प्रेरणा देते है, जहां व्यक्ति का हित और परमार्थ एक दूसरे से जुड़े हो।
5. **विवेक और आत्म नियंत्रण** – तुलसीदास जी विवेक अर्थात् सही गलत को समझने और आत्म नियंत्रण के महत्व पर जोर देते है,जो संघर्ष के समय आवश्यक है।
6. **सर्वांगीण विकास** – तुलसीदास जी की शिक्षा बौद्धिक नहीं है बल्कि पंचकोष जैसे अत्रमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनंदमय कोष के विकास से परिपूर्ण है। जिसमें व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और अध्यात्मिक विकास शामिल है।

3 तलसी साहित्य में पाठ्यक्रम का अनुप्रयोग

शिक्षा के उद्देश्यों के लिए पाठ्यक्रम का होना भी अति आवश्यक है। पाठ्यक्रम का आधार अहिंसा, सुन्दर भाषा, सत्य के मार्ग पर चलने वाला तथा क्षमा की सोच विकसित करने वाला होना चाहिए। सत्य व न्याय का पालन करने की केवल शिक्षा ही नहीं दी जानी चाहिए अपितु उसको अपने जीवन में भी उतारना चाहिए। ज्ञान का स्वरूप व्यक्ति में धैर्य विकसित करने वाला होना चाहिए। पाठ्यक्रम का आधार आस्था, भक्ति, अध्यात्मिक तथा सकारात्मक व्यक्ति विकास पर आधारित है।

पाठ्यक्रम किसी ज्ञान को प्रदान करने का सबसे सशक्त माध्यम होता है। पाठ्यक्रम एक साधन के रूप में कार्य करता है। पाठ्यक्रम लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग दर्शाता है। पाठ्यक्रम का स्वरूप न केवल अध्यात्मिक अपितु व्यावसायिक तथा आदर्शों के सर्वोत्तम गुणों के लिए होना चाहिए। पाठ्यक्रम के आधार पर मानवीय मूल्यों के साथ अध्यात्मिक मूल्यों का भी विकास होना चाहिए। तुलसी साहित्य में पाठ्यक्रम के मुख्य बिन्दु है –

1. लोक कल्याण
2. आदर्श चरित्र
3. सामाजिक शिक्षा
4. भाषा और शैली
5. भक्ति और दास्य भाव
6. रसों का प्रयोग

इन मुख्य बिन्दुओ के साथ ही तुलसी साहित्य में पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताऐं इस प्रकार है–

1. छात्रों को अच्छे बुरे का भेद सिखाना और नैतिक मूल्यों का विकास करना।

2. छात्रों को भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं से जोड़ना।
3. समाज में व्याप्त बुराईयों के प्रति जागरूकता लाना।
4. आदर्शों से प्रेरणा लेकर व्यक्तित्व का विकास करना।
5. छात्रों को भक्ति मार्ग की महत्ता समझाना।

अर्थात् तुलसी साहित्य का पाठ्यक्रम केवल पाठ पढ़ाना नहीं बल्कि उनके काव्य के संदेशों को जीवन में उतारना और एक सुसंस्कृत, नैतिक व कल्याणकारी समाज का निर्माण करना है।

4 तुलसी साहित्य में शिक्षण विधियों का अनुप्रयोग

तुलसी साहित्य का स्वरूप आस्तिक विचारधारा पर आधारित है। इसमें धर्मग्रंथ के आध्यात्मिक महत्व को बल दिया गया है। तुलसी साहित्य की रूपरेखा लोकमंगल एवं लोक कल्याण पर आधारित है। महाकवि तुलसीदास ने सर्वसाधारण तक अपनी बात को संप्रेषित करने के लिए प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि को आधार बनाया है। व्याख्यान विधि को अधिक रोचक एवं पुष्ट बनाने के लिए कथा–कथन एवं प्रश्नोत्तर जैसी प्रविधियों का उपयोग किया है। तुलसीदास जी का साहित्य कई विषयों को समाहित किए हुए है।

तुलसीदास जी का उद्देश्य शिक्षण विधियों के माध्यम से छात्रों को केवल तथ्यों को रटवाना नहीं है, बल्कि नवीन खोजने और नवीन रचने की आदत का विकास करना है। शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षण द्वारा विकसित करें, छात्रों को जो तथ्य बताए जाए उनमें विविधता हो। छात्रों के सामने तथ्यों से संबंधित उदाहरणों का भण्डार प्रस्तुत करें। तुलसीदास जी के अनुसार उदाहरणों की विविधता का अनुप्रयोग एक उत्तम शिक्षण विधि है। उदाहरणों के माध्यम से छात्र के मस्तिष्क में तुलना करना, संबंध स्थापित करना, तर्क करना, चिन्तन करना जैसी बौद्धिक क्षमताओं का विकास स्वतः ही हो जाता है।

समय–समय पर छात्रों के साथ प्रश्नोत्तर करना तथा प्रत्येक तथ्य से संप्रेषित करने के उपरांत छात्रों से पृष्ठपोषण प्राप्त करना जैसी प्रविधियों का उल्लेख भी तुलसी साहित्य में निहित है। इन प्रविधियों द्वारा छात्र को शिक्षण के समय सजग रखा जाता है। छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से भी विषय को रोचक बना सकते है। इससे छात्र की कल्पना शक्ति जाग्रत होती है। तथ्यों के ज्ञान के साथ कहानी को जोड़कर बच्चों को सुनाना जिससे उनकी जिज्ञासा, रूचि एवं सृजनात्मकता को बढ़ावा मिल सकें।

महाकवि तुलसीदास ने बच्चों को सदाचरण एवं नैतिक मूल्यों की महत्ता से परिचित कराने के लिए व्याख्यान विधि के अंतर्गत तुलनात्मक विधि का भी प्रयोग किया है। तुलसी साहित्य में शिक्षण विधियों का प्रयोग लोक कल्याण, नैतिकता और भक्ति को बढ़ावा देने के लिए किया गया है जिसमें सरल भाषा, अलंकार रस, कथावाचन और मनोवैज्ञानिक शिक्षा जैसे तकनीकों का उपयोग किया गया है। तुलसीदास जी ने आमजनता की भाषा का प्रयोग किया है, जिससे

उनके काव्य को समझना आसान हो गया और शिक्षा जन–जन तक पहुंची। अलंकारों का सुन्दर प्रयोग करके उन्होंने अपने विचारों को आकर्षक और प्रभावशाली बनाया, जिसमें शिक्षा ग्रहण करना आनंद दायक हो गया।

रामचरित मानस जैसे रचनाओं में कथा के माध्यम से उन्होंने नैतिक मूल्यों, मर्यादा और आदर्शजीवन शैली का चित्रण किया है जिससे पात्र स्वयं शिक्षक बन गये। धैर्य, संयम जैसे गुणों का महत्व बताया, जो विपरित परिस्थितियों में व्यक्ति को मजबूत बनाते है। उन्होंने विभिन्न विचारधाराओं एवं संस्कृतियों के बीच समन्वय स्थापित किया, जो सामाजिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है। अपने पात्रों जैसे राम, सीता, हनुमान एवं रावण के माध्यम से उन्होंने गहन दार्शनिक एवं नैतिक शिक्षाऐं दी है। उनका काव्य केवल व्यक्तिगत भक्ति तक सीमित नहीं है बल्कि समाज की उन्नति और लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत था, जो शिक्षा का एक बड़ा उद्देश्य है। तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं को एक विशाल कक्षा बनाया जहां भाषा, भावना और नीति का अद्भूत संगम था ताकि हर व्यक्ति एक बेहतर और धर्म निष्ठ जीवन जी सकें, यहीं उनके साहित्य की शिक्षण विधि है।

5 तुलसी साहित्य में गुरू का स्वरूप

तुलसीदास जी के साहित्य में गुरू को सर्वोच्च एवं पूज्यनीय माना गया है। तुलसी की दृष्टि में गुरू की महिमा अनन्त है, उनके अनुसार माता–पिता केवल जन्म देते है किन्तु गुरू संसार में सफलतापूर्वक जीवनयापन करने की योग्यता प्रदान करता है। तुलसी साहित्य में गुरू ईश्वर तुल्य, परममार्गदर्शक और अज्ञान के अंधकार को मिटाने वाली दिव्य ज्योति के रूप में दर्शाया है, जो शिष्य को भक्ति ज्ञान और जीवन का सही अर्थ सिखाते हुए सुख शांति प्रदान करता है। आषाढ़ की पूर्णिमा को हमारे शाास्त्र में गुरू पूर्णिमा कहते है। इस दिन गुरू पूजा का विधान है। गुरू के प्रति आदर एवं सम्मान व्यक्त करने के वैदिक शास्त्रों में कई प्रसंग बताए गए है। उसी वैदिक परम्परा के महाकाव्य रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कई अवसरों पर गुरू महिमा का बखान किया है। तुलसी ने गुरू के सर्वोच्च मानकर सर्वप्रथम गुरू की वन्दना की है –

'' बदऊ गुरू पद कंज, कृपा सिंधु नररूप हरि।
भहामोह तम पुंज, जासु बचन रविकर निकर।''

अर्थात् में उन गुरू महाराज के चरण कमल की वंदना करता हूं, जो कृपा सागर है और नर रूप में श्री हरि है। जिनके वचन महामोह रूपी घने अंधकार का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह है। रामचरित मानस की पहली चौपाई में गुरू महिमा बताते हुए तुलसीदास कहते है –

''बंदऊ गुरू पद पदम् परागा, सुरूचि सुवास सरम अनुरागा।

अभिअ मूरिमय चूरण चारू, समन सकल भव रज परिवारू।।''

इसका अर्थ है – मैं गुरू महाराज के चरण कमलों की ब्रज की वन्दना करता हूं जो सुरूचि, सुगंध और अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमरमूल संजीवनी का सुंदर चूर्ण है जो संपूर्ण रोगों के परिवार का नाश करने वाला है। इसी श्रृंखला में तुलसी ने गुरू महिमा के संबंध में रामचरित मानस में लिखा है –

''श्री गुरूपद नख मनि गन जोती, सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।
दलन मोह तम सो सप्रकार बडे भाग उर आवर जासू।।''

अर्थात् श्री गुरू महाराज के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता हैं, उसके बड़े भाग है। बालकाण्ड में तुलसी दास जी लिखते है गुरू महाराज के चरणों की रज कोमल और सुन्दर नयनामृत अंजन है, जो नेत्रों के दोषों का नाश करने वाली है। उनके अनुसार गुरू के सम्मुख कोई भेद छुपाना नहीं चाहिए। संसार रूपी समुद को पार करने के लिए गुरू को नौका रूप माना है तथा कहा है कि शिव–बह्मा आदि भी गुरू के बिना भवसागर को पार नहीं कर सकते है।

विनय पत्रिका में तुलसी ने गुरू महिमा के संबंध में कहा है कि गुरू शिष्य के हृदय में ज्ञान रूपी प्रकाश का अवतरण करता है तथा यह राम नाम के द्वारा होता है। इसमें शिष्य की दृष्टि खुल जाती है तथा दुःख समाप्त हो जाते है। तुलसी ने कहा कि अनन्य प्रतिष्ठा के लिए गुरू सेवा और गुरू के द्वारा बताये गये सद्मार्ग का अनुसरण करना साधक के लिए परम आवश्यक है। तुलसी की दृष्टि में गुरू देवतुल्य है वे गुरू को साक्षात् नारायण मानते है। उनके अनुसार गुरू आत्मा को दिशा देते है और जीवन को सतकर्मों की ओर ले जाते है। तुलसीदास जी ने स्वयं अनुभव किया कि गुरू की कृपा से ही उन्होने राम कथा सुनाई और उसमें रूचि उत्पन्न हुई है। अर्थात् तुलसी साहित्य में गुरू एक सर्वोपरि, दिव्य और प्राणदाता के रूप में चित्रित है, जिनकी कृपा के बिना जीवन यात्रा असंभव है।

6 तुलसी साहित्य में शिष्य का स्वरूप

तुलसी साहित्य में शिष्य का स्वरूप आदर्श, समर्पित, गुरू के प्रति श्रद्वावान और ज्ञान प्राप्ति के लिए तत्पर होता है। रामचरित मानस में भरत, लक्ष्मण, हनुमान के चरित्रों के माध्यम से दिखता है जहां शिष्य अपने गुरू के आदर्शों का पालन कर लोक मंगल और आत्म कल्याण प्राप्त करता है। यह आज भी प्रासंगिक है और वर्तमान में नेतिक शिक्षा का स्रोत है। तुलसी साहित्य में शिष्य के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित है –

1. **आदर्श चरित्र** – तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लक्ष्मण, हनुमान एवं भरत जैसे पात्रों को आदर्श शिष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। जो निस्वार्थ सेवा, कर्तव्य निष्ठा एवं गुरू के प्रति अटूट निष्ठा दर्शाते है।
2. **ज्ञानार्जन की इच्छा** – शिष्य में गुरू से ज्ञान प्राप्त कर उसे अपने जीवन में उतारने की तीव्र इच्छा होती है। गुरू पिता से भी बढ़कर है । तुलसीदास के अनुसार शिष्य जब तक आश्रम में रहे उसका कर्तव्य है कि पूर्ण रीति से गुरू की आज्ञा का पालन करें।
3. **नैतिक और सामाजिक आदर्श** – शिष्य का कर्तव्य केवल ज्ञान अर्जन तक नहीं है बल्कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का पालन करना भी है। जो समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए प्रेरणा का कार्य करें।
4. **समर्पण और निष्ठा** – शिष्य का कर्तव्य गुरू के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर अपनी विभिन्न गतिविधियों को गुरू के अनुसार क्रियान्वित करना है। एक आदर्श शिष्य लोक कल्याण में विश्वास रखता है।

आधुनिक शिक्षा और जीवन में भी तुलसी साहित्य के गुरू – शिष्य परम्परा और नैतिक मूल्यों को अपनाया जा रहा है। आज के समय में भी राम जैसे आदर्श चरित्र से प्रेरणा लेकर नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। तुलसी साहित्य में शिष्य का स्वरूप गुरू के प्रति समर्पण, आदर्श आचरण और लोक कल्याण के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति का प्रतीक है, जो आज भी जीवन मूल्यों का आधार है।

तुलसी साहित्य का शिक्षा में अनुप्रयोग व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, नैतिक मूल्यों, सामाजिक सद्भाव का लोक कल्याण पर केन्द्रीत है। रामचरित मानस तक आदर्श शिक्षाप्रद ग्रंथ है, जो भक्ति, कर्म, नारी सम्मान और सरलता से जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। तुलसी साहित्य आज भी शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर, चरित्र निर्माण और व्यावहारिक जीवन के लिए प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ

राय, पारस नाथ (1993), अनुसंधान परिचय, सप्तम संकरण, "लक्ष्मीनारायण अग्रवाल", आगरा।

Burns, R.B. (2000), Introduction to Research

https://www.shodhganga.co.in

www.iiste.org/Journals

https://books.google.co.in

https://en.wikipedia.org/wiki/Educational_research